# श्री गंगा जी का प्रदुर्भाव एवं भागीरथी ही गंगा, नाम की स्पष्टता

**आलोक नौटियाल**
हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत
Correspondence Author: आलोक नौटियाल
Received 1 Apr 2026; Accepted 12 May 2026; Published 29 May 2026
DOI: https://doi.org/10.64171/JSRD.5.S3.42-45

**सारांश**
प्रस्तुत प्रपत्र में श्री गंगा जी के उद्गम का समावेश कर गंगा नाम को लेकर जो भ्रामिकता बनी है, उसे स्पष्ट करने पर चर्चा की गई है। गंगा नदी हमारे राष्ट्र की जीवनदायिनी नदी है, जो युगों-युगों से हमें आध्यात्मिक, वैश्विक मूल्यों एवं धर्म, कर्म आदि सभी प्रकार की आस्थाओं से जोड़े हुई है। लेकिन इनके गंगा नाम पर कुछ हद तक भ्रमित किया जा रहा है। वर्तमान समय में लोगों को बताया जा रहा है, कि गंगा देवप्रयाग से बनती है जो कीहमारे पौराणिक शास्त्रों के अनुसार प्रामाणिक नहीं है, पुराणों में को ही गंगा कहा है, जो गौमुख से निकल कर गंगा सागर तक अविरल बह रही है,वही गंगा है। उक्त प्रपत्र द्वारा मुख्य रूप से भागीरथी ही गंगा है। गंगा देवप्रयाग से नहीं बल्कि गौमुख गंगोत्री से उद्धृत है। इस शोध पत्र में मुख्य रूप से स्पष्ट किया जाएगा।

**मुख्य शब्द:** गंगा, भागीरथी, विष्णुपदी, सुरसुरी, जाह्नवी आदि

## परिचय

श्री गंगा नदी भारत की सबसे महत्वपूर्ण एवं पवित्र नदी है। यह हिमालय के गंगोत्री हिमनद से निकलती है और बंगाल की खाड़ी में मिलने से पहले 2,525 किलोमीटर की यात्रा करती है। गंगा नदी को हिंदू धर्म में देवी माना जाता है और इसका धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व बहुत अधिक है। "न गंगा सदृश तीर्थ न देव: केशवात पर:"[1] अर्थात न तीर्थों में गंगा की कोई समता है, और न देवों में केशव की। वास्तव में वैदिक काल के बाद सरस्वती का महत्व कम हो जाने पर ही गंगा का महत्व बड़ा था। वर्तमान समय में कुछ मिथक के माध्यम से लोगों ने गंगा नाम देवप्रयाग से माना है, उनका कहना है की जब भागीरथी एवं अलकनंदा का संगम होता है तो गंगा बनती है, जबकि हमारे धर्म पुराणों के अनुसार श्री गंगा जी का प्रदुर्भाव श्री भगवान विष्णु के पदनख से हुआ है। जब महाराज भगीरथ अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए हिमालय की दिव्य भूमि में तपस्या करने के लिए आए तो उन्होंने अपने कठोर तप क्रिया द्वारा जागतकर्ता ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर श्री गंगा को स्वर्ग लोक से पृथ्वी पर लाया। पुराणों के आधार पर वह पुण्य क्षेत्र भारत के उत्तराखंड राज्य के हिमालय की गोद में बसे गढ़वाल का गोमुख स्थान है जोकि गंगोत्री नाम से विख्यात है। गंगा जहां उतरी, वह स्थान ही गंगोत्री कहलाया है।

## गंगा की उत्पत्ति

श्री गंगा जी के उत्पत्ति के विषय में वेद, पुराण से लेकर परवर्ती कवियों ने भी अपने-अपने कव्यों में विस्तार से वर्णन किया है। गंगा जी के प्रदुर्भाव की अनेक कथाएं हैं, लेकिन प्रमुख रूप से राजा भगीरथ के तप से जो गंगा पृथ्वीलोक पर अवतरित हुई वही भागीरथी यानी की गंगा कहलायी। राजा भगीरथ की वंशावाली कुछ इस प्रकार है। राजा मांधाता के सत्यव्रत हुए और उनके ही वंश में हरिश्चंद्र हुए हरिश्चंद्र के रोहित और रोहित से बाहुक, बाहुक से सगर नामक पुत्र हुए। राजा सगर के साठ हजार पुत्र हुए। एक दिन राजा सगर ने देवलोक पर विजय प्राप्त करने के लिये एक यज्ञ किया। यज्ञ के लिये घोड़ा आवश्यक था जो ईर्ष्यालु इंद्र ने चुरा लिया था। सगर ने अपने सारे पुत्रों को घोड़े की खोज में भेज दिया अंत में उन्हें घोड़ा पाताल लोक में मिला जो एक ऋषि के समीप बँधा था। सगर के पुत्रों ने यह सोच कर कि ऋषि ही घोड़े के गायब होने की वजह हैं, उन्होंने ऋषि का अपमान किया। तपस्या में लीन ऋषि ने हज़ारों वर्ष बाद अपनी आँखें खोली और उनके क्रोध से सगर के सभी साठ हज़ार पुत्र जल कर वहीं भस्म हो गये । अब कैसे इनका उद्धार होगा तो कपिल भगवान ने ही उपाय बताया कि माता गंगा के जल स्पर्श से ही इनका उद्धार हो सकता है, तब क्रमशः राजा असमंजस ने, असमंजस के पुत्र अंशुमान, अंशुमान के पुत्र दिलीप और दिलीप के पुत्र भगीरथ ने घोर तपस्या की ताकि गंगा को पृथ्वी पर लाया जा सके। अंत में राजा भगीरथ की तपस्या से ब्रह्मा जी प्रसन्न हुये और गंगा को पृथ्वी पर भेज कर एवं उसके बाद पाताल में जाने का आदेश दिया ताकि सगर के पुत्रों के आत्माओं की मुक्ति संभव हो सके। तब गंगा ने कहा कि मैं इतनी ऊंचाई से जब पृथ्वी पर गिरूंगी, तो पृथ्वी इतना वेग कैसे सह पाएगी? तब भगीरथ ने भगवान शिव से निवेदन किया, और उन्होंने अपनी खुली जटाओं में गंगा के वेग को रोक कर, एक लट खोल दी, जिससे गंगा की अविरल धारा पृथ्वी पर प्रवाहित हुई। आगे-आगे भगीरथ और पीछे-पीछे भागीरथी चल पड़ी। रास्ते में जह्नू नामक राजर्षि तप कर रहे थे, गंगा जी ने उनकी कुटिया को बहा दिया तो जह्नूऋषि ने पूरी गंगा जी का पान कर लिया। पुनः भगीरथ ने प्रार्थना की तो अपने कान से गंगा को प्रकट किया। इसलिए जह्नूपुत्री बनकर गंगा जी प्रकट हुई और उनका नाम जाह्नवी भी पड़ा अंत में जहां सगर पुत्रों की अस्थियां पड़ी थी, वहां जाकर गंगा मैया ने जैसे ही अपने पावन जल का स्पर्श किया वैसे ही सभी सगर पुत्रों का उद्धार हो गया। इस प्रकार से मां गंगा की उत्पत्ति का वर्णन शास्त्रों में मिलता है ।

**भागीरथी ही गंगा है नाम की स्पष्टता, शास्त्र एवं पुराणों के आधार पर**

गंगा शब्द का अर्थ है, निरंतर गतिशील प्रवाह इसकी व्युत्पत्ति करते हुए बताया गया है, जो सीधे स्वर्ग से पृथ्वी पर आए वह गंगा है। "गाम् पृथिवीं गच्छतीति गंगा"[2] हमारे शास्त्रों के आधार पर राजा भगीरथ की तपस्या के द्वारा जो गंगा स्वर्ग लोक से पृथ्वी लोक पर लायी गई वही भागीरथी या गंगा है।वाल्मीकि रामायण में स्पष्ट रुप से कहा गया है कि "गंगा त्रिपथगा नाम दिव्या भागीरथीति च"[3] अर्थात गंगा त्रिपथगामिनी है जो दिव्या एवं भागीरथी नाम से भी विख्यात है।

इसी प्रकार केदारखंड में मां गंगा की अनुगमन करने की व्याख्या की गई है "नेमिमार्गेण गंगापि नाम्ना भागीरथी स्मृता"[4] अर्थात भगीरथ के रथ के पहिए की लीक पर चलती हुई गंगा भागीरथी कहलाई। पुनः केदारखंड में वर्णित है-

"गतौ वे उत्तरे पार्श्वे श्वेत पर्वत सन्निधौ
यत्र गंगा समुत्पन्ना भागीरथतप स्थले।""[5]

राजा भगीरथ की तपस्थली भगीरथ शिला है को की गंगोत्री में विद्यमान है। इसके इसके अनुसार भी कहा जा सकता है कि भागीरथी ही गंगा है। स्कंद पुराण में का कहना है, "गोमुखानिः सृता गंगा"[6]गंगा गौमुख से निकलती है। गौमुख उत्तरकाशी जिले के गंगोत्री के पास में विद्यमान है।

स्कंदपुराण केदारखंड के अनुसार राजा भगीरथ जब अपने पितरों के उद्धार करने के लिए मां गंगा की उपासना कर रहे थे तभी तपस्या करने के पक्ष आश्चर्य रूपी दो कन्याएं दिखाई पड़ी उन्होंने नाना प्रकार के आभूषण पहने हुए थे, राजा ने उनसे पूछा आप दोनों कौन हैं? और तुम दोनों कहां जा रहे हो देवी? तब कन्या ने उनसे कहा भगीरथ तुम्हारे लिए रूप गोपनीय नहीं है, मैं गंगा हूँ और यह श्यामवर्णा देवी है, यह सूर्य की पवित्र कन्या है, इसका नाम यमुना है फिर मां गंगा ने कहा मैं हिमालय से दस रूपों में निकलती हूं उनमेंसे श्रेष्ठ धारा तुम्हारे साथ जाएगी और ये पृथ्वी पर अनेक नमो से जानी जायेगी। गंगा की मुख्य धारा जहाँ उतरी है, वही गांगोत्री तीर्थ कहलाया है।

"भगीथोऽस्मि हे कन्ये युवाभ्यां कुत्र गम्यते, इति तदेवि तं श्रुत्वा सिता प्रोवाच कन्यका।
गोप्यमस्ति न ते रूपं गंगास्मि हि भगीरथ, इयं या त्वसिता देवी सूर्य्यस्य तनया कन्यका।
यमुनेति समाख्याता सर्वकल्मषनाशिनी, दशधाहं महाराज निः सरामि हिमलयात्।
ज्येष्ठा श्रेष्ठतरा धारा त्वया सह गमिष्यति, पुनरन्यास्तु या धाराः संगमेष्यन्ति मे पुनः।
नाना नाम्न्यो महाराज भविष्यन्ति महीतले, दर्शनात्स्पर्शनात्पुण्या यतो मे द्रव सम्भवाः।
इदं गङ्गोंत्तर नाम तीर्थराडिढ भगीरथ।"[7]

गंगा जी के यूं तो सहस्त्रनाम हैं उन सब में एक नाम भागीरथी है, इसी प्रकार वृहन्नारदीय पुराण में भी गंगा की उत्पत्ति में लिखा है कि "गंगा पुण्य नदी ज्ञेया यतो विष्णुपदोद्भवा, रविजा यमुना। ब्रहांस्तयोर्योगः शुभावहः।[8] अर्थात गंगा विश्व की पवित्र नदी है जो भगवान विष्णु के पदनख से निकली है इसी लिए गंगा जी का एक नाम विष्णुपदी भी जाना जाता है।

श्रीमद् भागवत पुराण में मां गंगा अंतरण की कथा सुनाते हुए शुकदेव जी महाराज कहते हैं गंगा जी को पृथ्वी पर लाने के लिए अंशुमान ने राजा दिलीप ने कही वर्षों तक तपस्या की लेकिन वह असफल रहे और उनकी मृत्यु के पश्चात राजा दिलीप के पुत्र राजा भगीरथ ने कठोर तप कर मां गंगा को प्रसन्न किया, प्रसन्न होकर मां गंगा ने उन्हें वरदान मांगने को कहा तब राजा भगीरथ ने मां गंगा से मृत्युलोक चलने का वर मांगा।

"अंशुमांश्च तपस्तेपे गंगानयनकाम्यया, कालं महान्तं नाशक्नोत् ततः कालेन संस्थितः।
दिलीपस्तत्सुतस्तद्वदशक्तः कालमेयिवान्, भगीरथस्तस्य पुत्रस्तेपे स सुमहत् तपः।[9]

वाल्मीकि रामायण के अनुसार जब भगीरथ जी ने अपने पितरों के उद्धार के लिए तपस्या की तब ब्रह्मा जी ने दर्शन देकर भगीरथ की सराहना की और बोले हे नरशार्दुल ! महात्मा सगर के साठ हजार पुत्रों को तुमने तार दिया और वह देवताओं की तरह स्वर्ग लोक चले गए हैं। राजन जब तक संसार में समुद्र का जल रहेगा तब तक यह सगर के पुत्र देवता की भांति स्वर्ग लोक में विराजे जाएंगे यह गंगा तुम्हारी ज्येष्ठ पुत्री होगी और तुम्हारे ही भागीरथी नाम से विख्यात होगी। गंगा, त्रिपथगा, दिव्या, भागीरथी आदि इसके नाम होंगे।

"सागरस्य जलं लोके यावत्स्थास्यति पार्थिव, सगरस्यात्म जास्ता वत्स्वर्गे स्थास्यन्ति देववत्।
इयं च दुहिता ज्येष्ठा तव गंगा भविष्यति, त्वत्कृतेन च नाम्नाथ लोके स्थास्यति विश्रुता।
गंगा त्रिपथगा नाम दिव्या भागीरथीति च, त्रीन् पथो भावयन्तीति ततस्त्रिपथगा स्मृता।[10]

इसी प्रकार देवी भागवत में नारद जी श्री विष्णु भगवान से पूछ रहे हैं कि भगवन मां गंगा का उद्गम कैसे हुआ? तब श्री विष्णु जी कहते हैं कि राजा भगीरथ के लाखों वर्षों की कठोर तपस्या के बाद गंगा जी का प्रदुर्भाव हुआ है।

भगीरथस्त स्य पुत्रो महाभागवतः सुधीः, वैष्णवो विष्णु भक्तश्च गुणवान जरा मरः।
तपः कृत्वा लक्षवर्षं गंगानयनकारणात्, ददर्श कृष्णं ग्रीष्मस्थसूर्यकोटि समप्रभम्।[11]

विष्णु पुराण के अंतर्गत लिखा गया है कि दिलीप के पुत्र भगीरथ हुए जिसने गंगा जी को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाया जिस कारण गंगा जी का नाम भागीरथी हो गया।

"दिलीपस्य भगीरथः योऽसौ गङ्गा स्वर्ग दि हानीय भागीरथी संज्ञा चकार।"[12]

नारद महापुराण में गंगा की धार्मिक महत्व का प्रतिपादन करते हुए बताया गया है कि वह देश, वह जनपद, वे पर्वत और वे आश्रम भी धन्य है, जिनके समीप सदा पुण्यसलिला भागीरथी बहती रहती है।[13]

**हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में गंगा नाम की स्पष्टता**

कवि नूर मोहम्मद जोकि दिल्ली की बादशाह मोहम्मदशाह के दरबार के कवि थे, यह अपने काव्य इंद्रावती में लिखते हैं कि राजा भगीरथ ने अपने पित्रों के उद्धार के लिए मां गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर अपने कठोर तप से लाया है।

गंगापित्रन के उपवर्ग, भागीरथी सपूत।
विष्णुपदी लै आये, सहि दु:ख कष्ट बहुत।।[14]

तुलसी दास जी अपनी कृति विनय पत्रिका में गंगा वर्णन करते हुए लिखते हैं-

जय-जय भागीरथ नंदिनी मुनि मय चकोर चंदिनी।
नर नाग विबुध बंदिनी जय जहनु बालिका।
विस्नुपद सरोज जसि ईस सीस पर विभासि।
त्रिपथगसि पुण्य रासि पाप प्रछालिका।[15]

तुसली जी ने ही अपने दूसरे काव्य कवितावली में शुद्ध रूप से भगवती भागीरथी गंगा की वंदना की है। वे लिखते हैं कि हे मां भागीरथी नारायण भगवान के चरणों से प्रस्तुत जल को अपने चरणों से छूना भाग्य का भागी होना है। शंकर के रूप में इस जल को सिर पर धारण करते हुए भी जगत नियंता परमेश्वर के साथ बराबरी करने के दोष से भी डरता हूं, इतना कहते हुए कवि कामना करता है कि बार-बार शरीर धारण करके ही मां भागीरथी भगवान का भक्त हो, तेरे तट पर रहूं और मुझे पुनः कोई लाक्षण न लगे यही आपसे प्रार्थना है। तुलसी लिखते हैं –

वारि तिहारी मुरारि भए परसे पद पाप लहोगे।
ईस है सीस धरो पैडारो प्रभु की समता बड़ दोष दहोगौ।
बरू बारहि बार समीर धरौ रघुवीर कोहू तब तीर रहोगौ।
भागीरथी विनवो करजोरि बहोरि न खोरि लगै सो कहोगौ।[16]

इसी क्रम में भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि नंददास जी गंगा के अनेक नामो का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

विष्णुपदी निर्जर नदी, निगम नदी हरिरूप।
ध्रुव नंदा मंदाकिनी,भागीरथी अनूप।
सुरसरि ज्यों तिहुं लोक में, पाप हारि सुभ कारि।
तिम तुत कीरति सरित पिय, किय पुनीत नर नारि।।[17]

आगे चल कर हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध कवि सूरदास जी ने अपनी कृति में स्पष्ट रूप से राजा भगीरथ द्वारा मां गंगा का पृथ्वी पर लाया जाना और गंगा की महिमा का गान किया है। वह लिखते हैं, कि विष्णु के पदोदक रूप में प्रवाहमान गंगा का यह जल अत्यंत पवित्र है, वेद इसकी महिमा का गान करते हुए आनंद का अनुभव करते हैं। भगीरथ को भव्य वरदान देने वाली मां गंगा का जल पवित्र होने के साथ मुक्त दाता है। भगीरथ द्वारा लगातार तपस्या करने के उपरांत प्रसन्न हुए शंकर ने गंगा को धारण किया था, गंगा के जल में विष्णु प्रपंच की सभी चर-अचर को शरण मिलती है, ऐसी मां गंगा को धारण किया था। ऐसी मां गंगा तीनों लोकों में श्रृंगारहार के समान है। विधाता ने स्वयं तप करके संतो को सुख देने के लिए गंगा को प्रकट किया।

गंग तरण विलोकत नैन।
अतिहि पुनीत विष्णु पदोदक महिमा निगम पठत गुनि चैन।
परम पवित्र मुक्ति की दाता, भागीरथी भव्य नवरदैन।
द्वादस वर्ष सोए निसिवासर, तब संकर माषी है लैन।
त्रिभुवन हार सिंगार भगवती, सलिल चराचर जाके ऐन।
सूरदास विधाता कै तप प्रगट भई संतनि सुख दैन।[18]

**निष्कर्ष**

उपर्युक्त शोध पत्र को शास्त्रीय एवं साहित्यक आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जो भागीरथी नदी है, वही गंगा है।

"आसाद्य राज्यं स भगीरथोऽपि आनीय गंगा तपसा च भूमिम्"[19]

भगीरथ जी के तप बल से मां गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई, इस आधार पर गंगा जी का एक नाम भागीरथी पड़ा। लेकिन जो लोग अनर्गल प्रलाप करते हैं कि अलकनंदा से जब भागीरथी का संगम होता है, तब गंगा बनती है। यह शास्त्रीय आधार पर अप्रमाणिक जान पड़ता है। ये लोग यह तो मान रहे हैं कि गंगा को राजा भगीरथ ने तपस्या कर के पृथ्वी पर लाया लेकिन फिर कहते हैं वो भागीरथी है। जबकि इस विषय में तो कोई भी संशय नहीं होना चाहिए कि भागीरथी ही गंगा है। फिर भी कुछ लोगों का कहना है गंगा तो संगम से बनती है, जबकि गंगा बनती नहीं है गंगा का प्राकट्य हुआ है। ऊपरी शास्त्रीय आधार पर गंगा का उद्गम गौमुख से हुआ है और उसी स्थान से उनका नाम गंगा जाना जाता है, बाकी सभी सहस्त्रनाम उनके पर्यायवाची हैं। अतः शोध प्रपत्र की प्रामाणिकता के अनुसार गंगा नाम देवप्रयाग से ना होकर गौमुख गंगोत्री से ही माना जाना चाहिए।।

**संदर्भ**


1. पद्मपुराण : आदिखंड : पंक्ति 30/88
2. वरदा वसुंधनरा : गंगा अतीत एवं वर्तमान : पृष्ठ 118
3. वाल्मीकि रामायण : बालकाण्ड : (46 : 6)
4. स्कन्दपुराण : केदारखंड : अनुवादक डॉ0 शिवानंद नौटियाल : प्रकाशन वर्ष : शक 1931 : सन 2001 : हिन्दी साहित्य सम्मेलन : (36 :5) : पृष्ठ 119
5. वही : पृष्ठ : (204 : 16)
6. वही : पृष्ठ : (148 :14)
7. केदारखंड : अध्याय 39 : पृष्ठ : 141
8. वृहन्नारदीय पुराण : पूर्वभाग : 6 अध्याय : श्लोक 7 : प्रकाशन : सन 1989 : हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग : पृष्ठ 33
9. श्रीमद् भागवत महापुराण : नवम स्कंद : नवम अध्याय : श्लोक संख्या 1,2 प्रकाशन : गीता प्रेस, गोरखपुर : पृष्ठ 386
10. वाल्मीकि रामायण : बालकाण्ड : प्रशासन पंडित पुस्तकालय काशी : सर्ग 38 : पृष्ठ 105
11. श्रीमद् देवी भागवत महापुराण : नवम स्कंध : 11 अध्याय : श्लोक संख्या 13, 14 : प्रकाशन गीता प्रेस गोरखपुर : पृष्ठ संख्या 475
12. विष्णु पुराण : चतुर्थ अध्याय : 4 अंश : पृष्ठ 35

13. नारद पुराण : उत्तरभाग : 38-(8)
14. सम्पादक : डॉ. श्यामसुंदर दास : इंद्रावती : पहला भाग (1906), दोहा 97 : पृष्ठ 144
15. तुलसीदास : विनयपत्रिका : पद 96
16. तुलसीदास : कवितावली : उत्तरकांड : छंद 147
17. नंददास ग्रन्थावली : सम्पादक – बृजरत्नदास : दूसरा संस्करण. सं०2014 : ग्रंथमाला 16 : पृष्ठ 76 : दोहा 92,93
18. सुरसागर : का०न०प्र०स० काशी : प्रथमभाग : संस्करण 5 : पद. 456 : पृष्ठ 157
19. श्री विष्णुधर्मोत्तर पुराणम् : अध्याय 18 : श्लोक 29।